सजसजतर [स्जौ स्जौ त्रौ बुद्बुदम् H. 2. 320] बुद्बुद.

सतनयय (5-6-7) [सतना यौ यः शररसयतिर्भाति मन्दारमाला Jk. 2. 221] मन्दारमाला.

सनजनभस (3-5-5-5) [सुरभिः पुरशरयोर्यतिरिति सान्नजनभसाः Jk. 2. 225] सुरभि, शुभ.

19 **अतिधृतिः** (26)

जनभसनजग (5-5-5-4) [शरत्रयैर्युगैश्छिन्ना जन्भस्नजगा वरूथिनी Mm. 19. 7] वरूथिनी.

जसजसजसग (6-6-7) [जसौ त्रिरमुकौ गुरुश्च रसयोर्यतिश्च रतिलीला Jk. 2. 230] रतिलीला.

जसजसतभग (8-4-7) [गजाब्धितुरगैर्जसौ जसतभा गश्चेत् समुद्रतता Vr. 3. 96. 1] समुद्रतता.

नजभयभजग (7-12) [नजभयभा जगौ च रचना मुन्यर्कयतिरत्र सा Vr. 3. 96. 3] रचना.

नजभयसजग (11-8) नजभयसा जगौ च रचना शूलिकुम्भिरत्र सा Vr. 3. 96. 2] रचना.

ननजननल [ननना जनना लश्चन्द्रमाला Pp. 2. 190] चन्द्रमाला.

नननतनग [नचतुष्कात् तनगाः कनकलता Bh. 32. 177] कनकलता.

नननननग [नषट्कगा धवला Pp. 2. 244] धवला.

ननरजरजग [नयुगलगलघू निरन्तरौ यदा स पञ्चचामरः Chm. 2. 201] पञ्चचामर.

ननजरजरल [नयुगलल्गुरुर्निरन्तरं यदा स पञ्चचामरः P. 7. 22. 6] पञ्चचामर.

नभरसजजग (9-10) [नवाभिर्दशभिश्छिन्नं सरलं न्भ्रसजा जगौ Mm. 19. 8] तरल, सरल.

मतनसततग (5-7-7) [वृत्तं बिम्बाख्यं शरमुनितुरगैर्म्तौ न्सौ ततौ चेद् गुरुः Chm. 2. 202] चन्द्रबिम्ब, बिम्ब, वञ्चित, बिचित.

मतनसररग (5-7-7) [भूताश्वाश्वान्तं मतनसररगैः कीर्तितं पुष्पदाम Vr 3. 96. 6] पुष्पदाम, फुल्लदाम.

मरभनयनग (7-7-5) [म्रौ भ्नौ यो नो गुरुश्चेत्स्वरमुनिकरणैराह सुरसाम् Chm. 2. 199] सुरसा.

मरभससजग (7-12) [म्रौ भः सौ जगौ माधवीलता छैः (छ=7) H. 2. 332] माधवीलता.

मसजसततग (12-7) [सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् Chm. 2. 198] शार्दूलविक्रीडित.

मसजसनजग (12-7) [म्सौ ज्सौ न्जौ गो वायुवेगा H. 2. 322] वायुवेगा.

यभनयजजग (12-7) [इनाश्वैः स्याद् यभनयजजगाः कीर्तिता मणिमञ्जरी Chm. 2. 204] मणिमञ्जरी.

यमननररग (6-7-6) [य्मौ नौ रौ गो मुग्धकं चछैः (च = षट्; छ = सप्त) H. 2. 329] मुग्धक.

यमनसजजग (6-6-7) [रसैः षड्भिर्लोकैः यमनसजजा गुरुर्मकरन्दिका Chm. 2. 203] मकरन्दिका.

यमनसततग (5-7-7) [य्मौ न्सौ तौ गश्छाया H. 2. 325] छाया.

यमनसभतग (6-6-7) [इयं छाया ख्याता ऋतुरसहयैर्यो मनसा भ्तौ गुरुः Vr. 3. 96. 9] छाया.

यमनसररग (6-6-7) [रसर्त्वश्वैः य्मौ न्सौ ररगुरुयुतौ मेघविस्फूर्जिता स्यात् Chm. 2. 196] मेघविस्फूर्जिता, चन्द्रकान्ता, रम्भा, विस्मिता, सुवृत्ता.

रभजततग (10-9) [भौं जतौ तौ सगुरुकौ यदा दिग्ग्रहच्छेदभाग्वल्लकी Vr. 3. 96. 10] वल्लकी.

रसतजजग (10-9) [दिग्विरामि रसौ सतजा ज्गौ शार्ङ्गि भवेच्च गतागतम् Jk. 2. 229] शार्ङ्गि, ऊर्जित.

सतयभममग (10-9) [दशबाणाधैर्यतिधारी स्तौ यभमा मो गः शम्भुः Pp. 2. 194] शम्भु.

ससससससग [सूगौ तरुणीवदनेन्दुः (सू=सषट्कम्) H. 2. 333] तरुणीवदनेन्दु.

20 **कृतिः** (17)

तभजभजभलग [त्भौ ज्भौ ज्भौ ल्गौ शशाङ्करचितम् H. 2. 344] शशाङ्करचित.

नजनभसनलग [मदकलनी नजनभसा नलगाः Mm. 19. 10] मदकलनी.

ननननननलग [कनकलता सा कथिता षण्नैर्युक्ता तथा लगाभ्यां च Mm. 19. 11] कनकलता.

नभभमससलग (11-9) [नभभमाः ससला गिति मुद्रा रुद्रयतिः क्वचिदुज्ज्वलम् Jk. 2. 236] मुद्रा, उज्ज्वल.

भनयननरलग (3-6-11) [भ्नौ य्नौ त्रौ ल्गौ दीपिकाशिखा गचैः H. 2. 343] दीपिकाशिखा.

भभभभरसलग [भत्रितयाद्रसाल्गुरू यदि भासते भुवि भासुरम् Jk. 2. 235] नन्दक, भासुर.

भरनभभरलग (9-11) [भ्रनभभ्रल्गा ग्रहै रुद्रैर्विच्छिन्नोत्पलमालिका Mm. 19. 12] उत्पलमालिका, कामलता.

मनसनमयलग (5-8-7) [म्नौ स्नौ म्यौ ल्गौ सद्रत्नमाला ञजैः (पञ्चाष्टाभिर्यतिः) H. 2. 340] सद्रत्नमाला.

मरभनततगग (7-6-7) [म्रौ भ्नौ तौ गौ चित्रमाला छचैः H. 2. 339] चित्रमाला, सुप्रभा, सुवंशा.

मरभनयभलग (7-7-6) [ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ गः सुवदना Chm. 2. 206; Vr. 3. 97] सुवदना.

मरभनसमगग (7-6-7) [ख्याता पूर्वैः सुवंशा यदि मरभनाः सद्वयं गो गुरुश्च Chm. 2. 210] सुवंशा.

यमननततगग (6-7-7) [रसैरश्वैर्यमननततगैर्गेन शोभेयमुक्ता Vr. 3. 98. 2] शोभा.

रजरजरजगल [वृत्तमीदृशं तु नामतो रजौ रजौ रजौ गुरुर्लघुश्च Chm. 2. 208] वृत्त, गण्डका.